विचार बिन्दु

कला का अंतिम और सर्वोच्च ध्येय सौंदर्य है। –गेटे

सांस्कृतिक धरोहर रवींद्र मंच को बचाने की मुहिम

राजस्थान की राजधानी जयपुर को केवल उसके आमेर के महल, शहर के बीच स्थित हवामहल और जंतरमंतर और नगर के गुलाबी रंग से ही नहीं पहचाना जाता है, बल्कि यह शहर कला, साहित्य और संस्कृति का भी एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। कभी यह छोटी काशी कहलाया। उसकी इसी सांस्कृतिक पहचान का एक प्रमुख प्रतीक है रवींद्रमंच। दशकों तक यह थियेटर जयपुर और राजस्थान के कलाकारों, नाट्ययकर्मियों, संगीतकारों और साहित्यकारों के लिए एक पवित्र स्थल की तरह रहा है। यहां अनगिनत नाटक, संगीत कार्यक्रम, कवि सम्मेलन, नृत्य प्रस्तुतियां और सांस्कृतिक आयोजन हुए हैं, जिन्होंने शहर की सांस्कृतिक धड़कन को जीवित रखा। लेकिन विडंबना यह है कि आज वही रवींद्रमंच अपनी बदहाली और उपेक्षा की कहानी कह रहा है। जिस स्थान पर कभी कला और संस्कृति का उत्सव मनाये जाते थे, वहां आज अव्यवस्था, जर्जर ढांचे और प्रशासनिक लापरवाही के दृश्य दिखाई देते हैं। यह स्थिति केवल एक भवन की दुर्दशा नहीं है, बल्कि यह हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और विरासत के प्रति घटती संवेदनशीलता का भी प्रतीक है। वह भी तब जब जयपुर नगर को संयुक्त राष्ट्र संघ ने विरासत के रूप में मान्यता दी है। रवींद्रमंच को फिर से उसके पुराने गौरव में लौटाने के वास्ते शासन का ध्यान खींचने के लिये नगर के वरिष्ठ रंगकर्मियों की एक टोली ने इस रविवार को अफसानानिगार कृशन चन्दर की मशहूर कहानी 'जामुन का पेड़' का नाट्यय रूपांतरण कर उसे रवींद्र मंच पर खेला। दिलचस्प बात यह थी कि इसके लगभग सभी कलाकार 70 वर्ष से अधिक के वे लोग थे जिन्होंने रवींद्रमंच का स्वर्ण युग देखा था। रवीन्द्र मंच का निर्माण भारत सरकार की टैगोर थिएटर योजना के अंतर्गत किया गया था। इसकी परिकल्पना तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और संस्कृति मंत्री हुमायू कबीर ने की थी,जो चाहते थे कि देश के प्रत्येक राज्य की राजधानी में एक सांस्कृतिक रंगमंच स्थापित किया जाए। जयपुर में इसका निर्माण राजस्थान सरकार के सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा कराया गया और इसका नक्शा पीडब्ल्यूडी के मुख्य अभियंता परमानंद गजारिया ने तैयार किया। रवीन्द्र मंच मुख्य रूप से जयपुर में नाटक, संगीत-कला और नृत्य आदि ललित कलाओं के संरक्षण व संवर्धन हेतु बना था। दशकों तक यह ललित कलाओं से जुड़े संस्कारों और उन संस्कारों से जुड़ी संस्कृति को बढ़ावा देता रहा। थियेटर और फिल्म जगत के अनगिन अद्भुत और अप्रतिम नामी-गिरामी कलाकार जैसे ओम शिवपुरी, सुधा शिवपुरी, पिन्चू कपूर, असरानी, पाण्डे बहिनें, इरफ़ान ख़ान से लेकर नरेन्द्र गुप्ता तक यहां अपने को मांझते रहे और इसकी जीवन्तता में अपना-अपना योगदान देते रहे। यह मंच उन संघर्षरत कलाकारों के लिए भी एक महत्वपूर्ण अवसर रहा है, जिन्हें बड़े मंचों तक पहुंचने का मौका यहीं से मिला। इसकी उपेक्षा केवल एक भवन की उपेक्षा नहीं, बल्कि उन कलाकारों और उनकी मेहनत का भी अपमान है।

रवींद्रमंच का उद्घाटन 15 अगस्त 1963 को हुआ। इसका स्वामित्व और नियंत्रण राजस्थान सरकार के पास था और इसका संचालन राज्य सरकार के कला-संस्कृति विभाग के अधीन रहा। यह वह समय था जब राजनीतिक नेतृत्व तथा प्रशासनिक तंत्र के अधिकारियों में कला और साहित्य की समझ हुआ करती थी और उन्हें बढ़ावा देने का उत्साह भी। उसी के चलते रवींद्रमंच ने अपना स्वर्णकाल देखा। मगर समय के साथ राजनैतिक नेतृत्व और प्रशासनिक तंत्र सामाजिक सरोकारों से दूर होता चला गया जिसके परिणाम स्वरूप कला और संस्कृति के बड़े जतन से बनाए गए रवींद्रमंच जैसे संस्थान अपनी हैसियत खोते चले गए और बाज़ार की ताकतों के हाथों में खेलने वाली ईवेंट आधारित व्यवस्थाएं पसरती चली गईं। नगर की प्राइम लोकेशन स्टेच्यू सर्किल पर इस आशा के साथ बिड़ला ऑडिटोरियम बना कि गुलाबी नगरी में दिल्ली के बराबर गरिमापूर्ण सम्मेलनों के लिये स्थान मिलेगा। मगर वह कुलीनों का होकर रह गया। जवाहर कला केंद्र को वैसी व्यवस्था कभी मिली ही नहीं जिसकी कल्पना मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर के समय उसको बनाते वक़्त की गई। पिछली सरकार ने राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर बना कर कुलीन वर्ग को नया तोहफा दिया। विधान सभा के निकट कॉन्सटीट्यूशनल क्लब नाम से जो नया ठिकाना बना है वह भी बड़े लोगों का है। ऐसे में आम आदमी के इकलौते रवींद्र मंच को कौन संभाले! किसी व्यवस्था को खत्म करने के लिये प्रशासनिक अधिकारियों के पास अनेक औजार होते हैं और वे निर्वाचित नेतृत्व को वे बोतल में उतारना जानते हैं। सरकार ने अपनी जिम्मेवारी से पल्ला झाड़ते हुए रवींद्रमंच को स्वायत्त रूप से संचालित करने की दुहाई दे कर रवीन्द्र मंच सोसाइटी नामक संस्था का गठन कर दिया। रवीन्द्र मंच सोसाइटी का गठन इस घोषित उद्देश्य के साथ किया गया कि इस सांस्कृतिक परिसर का प्रबंधन तथा कला-संस्कृति से जुड़ी गतिविधियों को प्रोत्साहित देना है। मगर शासन ने उसका संचालन कलाकारों और कला प्रेमियों को सौंपने के बजाय अनिच्छुक और अज्ञानी सरकारी अधिकारियों को ही देने की विधिक व्यवस्था कर ली। पंजीकृत रवीन्द्र मंच सोसाइटी के विधान के अनुसार इसका संचालन एक कार्यकारिणी समिति करती है जिसका अध्यक्ष प्राय: राजस्थान सरकार का कला एवं संस्कृति मंत्री या उनके द्वारा नामित वरिष्ठ अधिकारी होता हैं। इसके सभी पदाधिकारी सरकारी अमले से आते हैं। कार्यकारिणी सदस्य के रूप में अधिकारियों के साथ रंगमंच, साहित्य, संगीत, नृत्य और ललित कला से जुड़े विशेषज्ञ, कलाकार के मनोनयन की व्यवस्था जरूर इसके विधान में है। कुल मिलाकर शासन तंत्र ही छद्म रूप में यहां बिराजता है। भले ही कागजों में रवींद्रमंच सोसाइटी शासन तंत्र से अलग एक स्वायत्त संस्थान है किन्तु इसका वित्तीय तथा प्रशासनिक नियंत्रण राजस्थान सरकार के अधिकारियों के हाथ में ही है। रविवार को जब वहां 'जामुन का पेड़' खेला गया तो जयपुर के फिक्रमंद लोग इसे बचाने की मुहिम को नैतिक समर्थन देने के लिये उसके सभागार में खचाखच भरे थे। किसी ने इस बात की परवाह नहीं की कि हॉल में एसी की तो बात छोड़ें पंखे भी नादारद थे, पीने का पानी नहीं था और सभी टॉयलेट इसलिए बंद थे कि वे उपयोग लायक नहीं थे। कभी जयपुर की सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रही इस जगह की दुर्दशा पर हर कोई हैरत में था, नाराज था। इसलिए जब नाटक के बाद जोरदार तालियां बजी तो वे कलाकारों की दाद में तो थी हीं, प्रशासन के मुंह पर तमाचा भी थीं।

> **भले ही कागजों में रवींद्रमंच सोसाइटी शासन तंत्र से अलग एक स्वायत्त संस्थान है किन्तु इसका वित्तीय तथा प्रशासनिक नियंत्रण राजस्थान सरकार के अधिकारियों के हाथ में ही है। रविवार को जब वहां 'जामुन का पेड़' खेला गया तो जयपुर के फिक्रमंद लोग इसे बचाने की मुहिम को नैतिक समर्थन देने के लिये उसके सभागार में खचाखच भरे थे।**

अच्छी बात है कि समाज इसे बचाने की मुहिम में शामिल हो रहा है। जामुन का पेड़ के मंचन के बाद किसी भावुक दर्शक ने जेब से 11 हजार रुपये निकाल कर देने की कोशिश की कि रवींद्रमंच की मरम्मत हो सके। नाट्ययकर्मियों ने उसे लेने से इनकार करते हुए उससे कहा कि वह यह राशि मुख्यमंत्री को जाकर दें क्योंकि उनकी सरकार के पास इस विरासत को संभालने के लिये कोष नहीं है। कला प्रेमियों, कलाकारों और सामाजिक संगठनों की आवाज ऐसे ही निर्वाचित शासन तक पहुंचती है। उस शाम रवींद्रमंच पर जामुन का पेड़ देखने पहुंचे लोगों का हुजूम आवाम की आवाज़ थी, जो यह संदेश दे रही थी कि यदि हम अपने सांस्कृतिक केंद्रों और संस्थानों की उपेक्षा करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियां अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर हो जाएंगी। रवींद्र मंच की वर्तमान स्थिति हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सचमुच संवेदनशील हैं? क्या हम उन स्थानों को बचाने के लिए तैयार हैं जिन्होंने वर्षों तक हमारी कला और संस्कृति को मंच दिया? समय की मांग है कि रवींद्र मंच को उसकी पुरानी गरिमा और पहचान वापस दिलाई जाए। यदि अभी उचित कदम नहीं उठाए गए, तो यह सांस्कृतिक धरोहर धीरे-धीरे इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह जाएगी। जयपुर जैसे सांस्कृतिक शहर के लिए यह एक बड़ी क्षति होगी। इसलिए आवश्यक है कि प्रशासन और समाज दोनों मिलकर इस मंच को पुनर्जीवित करने की दिशा में ठोस कदम उठाएं, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी यहां कला और संस्कृति का वही उत्सव फिर से देख सकें, जो कभी इस मंच की पहचान हुआ करता था। कला और संस्कृति के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों का कहना है कि यदि सरकार और प्रशासन थोड़ी गंभीरता दिखाए, तो रवींद्रमंच को फिर से उसी गौरव के साथ स्थापित किया जा सकता है। इसके लिए केवल भवन की मरम्मत ही नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीकी सुविधाओं और बेहतर प्रबंधन की भी आवश्यकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार, प्रशासन और समाज सभी मिलकर इस सांस्कृतिक धरोहर को बचाने की जिम्मेदारी निभाएं और ऐसी व्यवस्था करें कि यहां नियमित रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन फिर शुरू हो ताकि यह स्थान फिर से कलाकारों और दर्शकों से जीवंत हो सके। रवींद्रमंच सोसाइटी के विधान में उसके मुख्य कार्य रवीन्द्र मंच परिसर का प्रबंधन और रखरखाव करना, नाट्यय, संगीत, नृत्य और साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करना, विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं को कार्यक्रम आयोजित करने के लिए मंच उपलब्ध कराना, स्थानीय कलाकारों और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देना तथा मंच की मरम्मत, आधुनिकीकरण और सुविधाओं का विकास करना है। राज्य सरकार का पहला दायित्व है कि वह इस संस्थान को नियमित और पर्याप्त आर्थिक सहायता प्रदान करे। रवींद्रमंच जैसे संस्थानों को उन व्यावसायिक सार्वजनिक संस्थानों की भांति नहीं समझा जा सकता जिन्हें घाटे में बता कर उन्हें बेच दिया जाता है। ललित कला संस्थान केवल वर्तमान कला को बढ़ावा नहीं देते, बल्कि वे सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के भी माध्यम होते हैं तथा किसी भी समाज की सांस्कृतिक आत्मा होते हैं। यदि इन्हें उपेक्षित छोड़ दिया जाए तो समाज अपनी रचनात्मक पहचान खो सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

'स्व का भाव' जगाता भारतीय नववर्ष

पंकज मीणा

विश्व में भारत, ईरान, मिश्र, रोम इत्यादि प्राचीनतम समृद्ध बस्तियों वाले देश है। साथ ही ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, बोलीवियों, पेरू और भारत का कुछ क्षेत्र तथा अफ्रिकी देश आदिवासियों की प्राचीन बस्तियां है। इन सब देशों की बहुत समृद्ध भाषा परंपरा व संस्कृति है। इन्ही परम्पराओं, भाषा और संस्कृति के समान विश्व के अनेक देशो की अपनी ज्योतिष, वास्तु व काल गणनाए भी है जो कही सौर आधारित है तो कही चंद्र आधारित है। अपनी काल गणनाओं के साथ ही यह देश अपने वर्ष महीनों की गणना भी उसी के अनुसार करते है। इसी गणना से इन देशों के महीनों की संख्या, समयचक्र, वर्ष के प्रथम माह भी अलग अलग है। यूरोप, अमेरिका वर्चस्व के कारण धीरे धीरे विश्व के उपनिवेश देशों में यूरोप, अमेरिका की भाषा के साथ ही काल गणना, ग्रेगेरियन कैलेंडर को स्वीकार कर लिया। भारत में ब्रिटिश शासन व्यवस्था के प्रभाव से ग्रेगेरियन कैलेंडर शासकीय कैलेंडर बन गया परंतु देश की जनता में ग्रेगेरियन कैलेंडर कभी भी लोकप्रिय नहीं हो पाया है। स्वतंत्रता के 78 वर्ष बाद भी बहुसंख्यक जनता भारतीय काल गणना पर आधारित शक/विक्रम संवत का ही प्रयोग करती हैं। देश में मनाए जाने वाले समस्त त्यौहार/व्रत भी इसी कैलेंडर के आधार पर मनाए जाते है। यहां तक व्यापार अथवा वित्त वर्ष भी भारतीय काल गणना के प्रथम दिवस व ग्रेगेरियन कैलेंडर के सामंजस्य के आधार पर अप्रैल माह से प्रारंभ होता है।

यूरोप अमेरिका के इतर समृद्ध परंपराओं वालों देशों की चर्चा करे तो जापान में सम्राट के जन्म आधारित कैलेंडर, ईरान अफगानिस्तान में हिजरी, नेपाल में विक्रम संवत आदि कैलेंडर उपयोग में लिए जाते है। चीन में शासकीय रूप से अवश्य ग्रेगेरियन कैलेंडर उपयोग में लिया जाता है परंतु वहां भी भारत के समान त्यौहार इत्यादि देशज कैलेंडर से ही मनाए जाते है। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात ग्रेगेरियन कैलेंडर ही उपयोग लिया परंतु जनता शक/विक्रम संवत की ही उपयोग करती रही। इस विरोधाभास के कारण सरकार ने 1952 में प्रसिद्ध वैज्ञानिक मेघनाथ साहा की अध्यक्षता में कैलेंडर सुधार समिति बनाई। समिति के अध्ययन का निष्कर्ष था कि देश में शक/विक्रम संवत सहीत 30 विभिन्न कैलेंडर चलन में है। समिति की रिपोर्ट के आधार पर सरकार ने शासकीय व्यवस्था में ग्रेगेरियन कैलेंडर के साथ शक संवत को शामिल कर एक साझा कैलेंडर 22 मार्च 1957 को अंगीकार किया।

देश के गत 10-12 वर्ष बदलाव का काल है, इस काल में बडे स्तर पर उत्तरोत्तर बदलाव हुए है। इस एक दशक में भारत में विश्व स्तरीय सडक परिवहन, रेल नेटवर्क का निर्माण हुआ है तो साथ ही कृषि उत्पादन अभी तक की सर्वश्रेष्ठ है। आज भारत दुग्ध उत्पादन, गेंहू, चावल उत्पादन में पूरे विश्व में अव्वल है। निर्यात गत 10 वर्षों में लगभग दुगुना हो चुका है, भारत की जीडीपी दर विश्व में सर्वाधिक है। यह तमाम आंकडे बताते है कि भारत विकसित देशों से भी तेज विकास कर रहा है। इन तमाम प्रयासों का परिणाम है कि देश के 25 करोंड़ जन गरीबी रेखा से बाहर आए है। उत्पादन, इन्फ्रास्ट्रक्चर और आर्थिक परिदृश्य के अतिरिक्त गत 10-12 वर्षों में एक बडे बदलाव का कार्य देश में जारी है। लगभग 800 वर्षो की परतंत्रता के उपरांत देश की जनता के मन मस्तिष्क में 'स्व का भाव' जगाने का कार्य अर्थात देशज, स्वदेशी अथवा भारतीयता पर अधिक विश्वास व गर्व करना। जहां स्वतंत्रता पश्चात भारतीय विचार, शिक्षा संस्कारों महापुरूषों को स्थापित करने का समय था, वहां विचारविहीन सरकारों ने पश्चिम का अनुसरण किया। इस बात का किसी के पास जवाब नहीं कि स्वतंत्रता के पश्चात भी लॉर्ड पंचम की मूर्ति इंडिया गेट पर क्यों लगी रही, संसद परिसर में लूटियंस की मूर्ति क्यों थी? जिन मुगल शासकों ने धर्म के नाम पर कत्लेआम मचाया, उनके नाम पर शहरों और मार्गो का नाम आजाद भारत में क्यों? महाराणा प्रताप और शिवाजी की जगह अकबर और औरंगजैब महान क्यों?

आज भारत विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। समय-समय पर विश्व के तमाम नेता यह स्वीकार भी कर चुके है कि भारत में विश्व नेतृत्व की संभावना है। भारत महान था ओर महान रहेगा। प्रत्येक भारतीय देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा, परंपराओं और इतिहास पर गर्व करता है। चंद्र-सौर आधारित काल गणना शक/विक्रम संवत सर्वश्रेष्ठ व अदभुद्ध है, जो देश के ऋतु परिवर्तन में सटीक है। इन्हीं कारणों से वर्ष प्रतिपदा भारतीय नववर्ष गत 10-15 वर्षों में बडे पैमाने पर उल्लास के साथ मनाने लगा है।

–पंकज मीणा,
प्रवक्ता, भाजपा राजस्थान

भटकता लोक : तंत्र के राज में

राजेन्द्र जोशी

दुनिया भर में लोकतंत्र का डंका बज रहा है। बदलते वैश्विक परिवेश में इसे सबसे पवित्र और सर्वप्रिय शासन-प्रणाली मान लिया गया है। राजतंत्र की आलोचना के दौर में लोकतंत्र को श्रेष्ठ सिद्ध करने की होड़ लगी हुई है, जहां लोक की भागीदारी को उसकी सबसे बड़ी ताकत बताया जाता है। भारत जैसे युवा होते लोकतंत्र में भी यही नारा गूंजता है- 'लोक का राज'। लेकिन लगभग आठ दशक बीतने को हैं, फिर भी लोकतंत्र का सच्चा मूल्यांकन बाकी है। आज लोकतंत्र संख्या बल का आधार भर रह गया है। सवाल उठता है: शासन असल में लोक का हो रहा है या तंत्र का? लोकतंत्र में लोक की सहभागिता कितने प्रतिशत है? और तानाशाही व लालफीताशाही कैसे इतनी शक्तिशाली हो गई?

भारत का लोकतंत्र 1947 में आजादी के साथ जन्मा । संविधान ने हर नागरिक को मताधिकार का अधिकार दिया। गांधीजी का स्वप्न था 'ग्राम स्वराज' का, जहां गांव स्तर पर सीधे लोक का शासन हो। लेकिन वास्तविकता कुछ और है। संसदीय लोकतंत्र में तंत्र-यानी प्रशासनिक मशीनरी, राजनैतिक दल और नौकरशाही ने लोक को पीछे धकेल दिया है। चुनावी प्रक्रिया लोकतंत्र का एकमात्र प्रतीक बन गई है, जबकि लोक की दैनिक भागीदारी शून्य के करीब है। पंचायती राज व्यवस्था को 73वें और 74वें संशोधन से मजबूत करने का प्रयास हुआ । लोकतंत्र में तानाशाही का प्रवेश चिंताजनक है। राजनैतिक नेता भी व्यक्ति पूजा के शिकार होकर तानाशाही प्रवृत्ति अपनाते हैं। उदाहरणस्वरूप, हाल के वर्षों में विपक्षी नेताओं को जेल भेजने और जांच एजेंसियों के दुरुपयोग करना तंत्र की चालाकी हैं। अब तक कई प्रमुख विपक्षी नेता गिरफ्तार हुए हैं। यह लोकतंत्र नहीं, बल्कि 'इलेक्टोरल ऑटोक्रेसी' का रूप है, जैसा कि राजनीतिक वैज्ञानिक यशोगिल ने इसे नाम दिया। तंत्र लोक को लड़ाकर राज करता है। वर्तमान लोकतंत्र में हिंदू-मुस्लिम, जाति-जाति के नाम पर विभाजन की राजनीति चरम पर है।

2024 के लोकसभा चुनावों में देखा गया कि कैसे आरोप-प्रत्यारोप का जहर लोकतंत्र की नींव को खोखला कर रहा है। लालफीताशाही लोकतंत्र का सबसे बड़ा दुश्मन है। नौकरशाही, जो ब्रिटिश काल की देन है, आज भी 'साहब-भक्ति' में लिप्त है। एक आम नागरिक को सरकारी योजना का लाभ लेने के लिए कितने चक्कर लगाने पड़ते हैं? तंत्र ने लोक को उपभोक्ता बना दिया-वोट डालो, फिर भूल जाओ। लोक की सहभागिता मात्र 1-2 प्रतिशत है; बाकी 98 प्रतिशत तंत्र के हाथ में। विश्व बैंक की रिपोर्ट बताती है कि भारत में नागरिक भागीदारी सूचकांक निम्न स्तर पर है। लोकतंत्र की यह विडंबना है कि तंत्र के आगे लोक नृत्य करता हुआ, हाथ जोड़े खड़ा है। लोकतंत्र केवल चुनावी बन गया है, जबकि लोकतंत्र का मूल्यांकन लोक के साथ होना चाहिए। प्राचीन भारत में 'राजधर्म' की अवधारणा थी, जहां राजा लोक का सेवक होता था। महाभारत में भीष्म पितामह कहते हैं, 'प्रजा ही राज्य का आधार है'। लेकिन आधुनिक लोकतंत्र में राजा बन गया है तंत्र। पिछले दशकों में भ्रष्टाचार के घोटाले ने साबित किया कि लोक का पैसा तंत्र के जेब में जाता है। सीएजी रिपोर्ट्स धूल खाती रहती हैं। युवा लोकतंत्र का मूल्यांकन अब अनिवार्य है। यदि नहीं हुआ, तो लोक केवल नाम का रह जाएगा। संयुक्त राष्ट्र की 'लोकतंत्र सूचकांक' 2024 रिपोर्ट में भारत को 'पूर्ण लोकतंत्र' से 'त्रुटिपूर्ण लोकतंत्र' की श्रेणी में गिराया गया है। स्विट्जरलैंड जैसे देशों में प्रत्यक्ष लोकतंत्र है, जहां जनमत संग्रह से नीतियां बनती हैं। भारत में भी नागरिक संहिता, जैसे मुद्दों पर जनमत संग्रह क्यों नहीं?

सोशल मीडिया युग में युवा जागरूक हैं, लेकिन फेक न्यूज और ट्रोल आर्मी तंत्र के हथियार बन गए हैं। लोक की भूमिका पर गहन चिंतन आवश्यक है। लोकतंत्र में लोक को सक्रिय भागीदार बनाना होगा। पहला कदम: शिक्षा में लोकतांत्रिक मूल्यों का समावेश। 2020 में वोकल फॉर लोकल का जोर है, लेकिन व्यावहारिक प्रशिक्षण कहां? दूसरा, विकेंद्रीकरण मजबूत करें-पंचायतों को वित्तीय स्वायत्तता दें। तीसरा, डिजिटल लोकतंत्र: ई-गवर्नेंस से पारदर्शिता लाएं, जैसे एस्टोनिया का मॉडल। चौथा, नागरिक समाज को सशक्त करें। समय आ गया है कि लोक जागे। भटकते लोकतंत्र को सही दिशा देने के लिए मूल्यांकन अभियान चलाएं। युवा, महिलाएं, ग्रामीण-सभी को लोक की भूमिका समझाएं। यदि तंत्र ने लोक को गुलाम बना लिया, तो लोकतंत्र का स्वरूप राजतंत्र जैसा हो जाएगा। असल शासन का अधिकार लोक का है, न कि तंत्र का। अब चुप्पी तोड़ें, अन्यथा इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। लोकतंत्र का भविष्य लोक के हाथ में है-उसे थाम लें।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

''बार हैडेड गूज़'' को रास आ रही है चाकसू के बोरखेड़ा गांव के तालाब की आबोहवा

लद्दाख, मंगोलिया और तिब्बती पठार में पाए जाने वाले और सर्दियों में दक्षिण एशिया की ओर प्रवास करने वाले प्रवासी पक्षी ''बार हैडेड गूज़'' चाकसू के गांव में डेरा डाले हुए हैं

डॉ. कमलेश शर्मा

सर्दियों के जाने के साथ-साथ राजस्थान की झीलों और तालाबों से प्रवासी पक्षियों की विदाई लगभग पूरी हो चुकी है, लेकिन जयपुर के समीप चाकसू क्षेत्र में बोरखेड़ा गांव का तालाब इन दिनों एक अलग ही कहानी बयां कर रहा है। लद्दाख, मंगोलिया और तिब्बती पठार में पाए जाने वाले और सर्दियों में उच्च हिमालय को पार कर दक्षिण एशिया की ओर प्रवास करने वाले प्रवासी पक्षी ''बार हैडेड गूज़'' जयपुर के निकट डेरा डाले हुए हैं। एक दो की संख्या में नहीं अपितु 500 से अधिक की संख्या में ''बार हैडेड गूज़'' के तीन बड़े-बड़े झुंड पक्षी प्रेमियों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

एक दिन में 1600 किमी तक भरते हैं उड़ान :- स्थानीय बोलचाल में ''राजहंस'' के नाम से जाने-पहचाने वाले ''बार हैडेड गूज़'' दुनिया के सबसे ऊंचाई तक उड़ान भरने वाले पक्षियों में गिने जाते हैं। ये पक्षी 12,000 से 14,000 फीट की ऊंचाई तक उड़ान भर सकते हैं और प्रतिदिन बिना रुके लगभग 1600 किलोमीटर तक की दूरी तय करने में सक्षम होते हैं। इनके शरीर में पाया जाने वाला विशेष प्रकार का हीमोग्लोबिन कम ऑक्सीजन वाले वातावरण में भी अधिक ऑक्सीजन अवशोषित करने में मदद करता है, जिससे ये हिमालय के ऊंचे दर्रों को पार कर पाते हैं।

- **500 से अधिक की संख्या में ''बार हैडेड गूज़'' के तीन बड़े-बड़े झुंड बोरखेड़ा गांव के तालाब में पक्षी प्रेमियों के आकर्षण का केन्द्र बने हुये हैं**
- **स्थानीय बोलचाल में ''राजहंस'' के नाम से जाने-पहचाने वाले ''बार हैडेड गूज़'' दुनिया के सबसे ऊंचाई तक उड़ान भरने वाले पक्षियों में गिने जाते हैं**

तालाब सूखा पर वनस्पति आई रास :- बोरखेड़ा तालाब का अधिकांश हिस्सा सूख चुका है, लेकिन पांच अलग-अलग हिस्सों में बचा पानी इन हिमालय पार करने वाले मेहमानों के लिए फिलहाल ठिकाना बना हुआ है। सूखते जलाशय के बीच बची छोटी-छोटी जल धाराओं में सैकड़ों ''बार हैडेड गूज़'' का झुंड दिनभर सक्रिय रहता है। यह पक्षी स्थानीय जल पक्षियों के साथ तैरते, उड़ते और जल क्रीड़ा करते दिखाई देते हैं। कभी ये शांत पानी में तैरते दिखाई देते हैं, तो कभी अचानक पूरे समूह के साथ आकाश में उड़ान भर लेते हैं। स्थानीय पक्षियों के साथ उनकी यह गतिविधियां तालाब के शांत वातावरण को जीवंत बना देती हैं और प्रकृति की एक दुर्लभ झलक प्रस्तुत करती हैं।

एक साथ इतनी बड़ी संख्या में इन पक्षियों की यहां उपस्थिति के बारे में पर्यावरण विज्ञानी व सेवानिवृत्त वन अधिकारी डॉ. सतीश कुमार शर्मा बताते हैं कि इन दिनों तापमान में उतार-चढ़ाव हो रहा है ऐसे में कम मानवीय गतिविधि व सुरक्षित वातावरण की अनुकूलता देख पक्षी यहां रुके हुए हो सकते हैं। इसी प्रकार यह भी हो सकता है कि इन पक्षियों का कोई एक झुंड यहां रुका हुआ हो और आसपास के तालाबों से कोई एक और झुंड यहां पहुंचा हो और इन पक्षियों को देख उस झुंड ने भी यहां पड़ाव डाल दिया हो। उन्होंने बताया कि ''बार हैडेड गूज़'' पूर्णतया शाकाहारी पक्षी है और यहां मौजूद जलीय वनस्पतियों के साथ आसपास के क्षेत्र में नर्म घास इत्यादि, खुला व सुरक्षित क्षेत्र और अपेक्षाकृत शांत वातावरण प्रवासी पक्षियों को कुछ समय और ठहरने के लिए अनुकूल परिस्थितियां प्रदान कर रहे हैं।

डॉ. कमलेश शर्मा,
पक्षी विशेषज्ञ व अतिरिक्त निदेशक (प्रचार), पुलिस मुख्यालय, जयपुर।

राशिफल

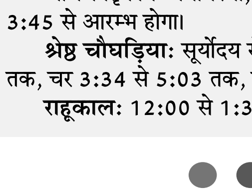

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 18 मार्च, 2026

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र गुरूवार प्रात: 5:21 तक, शुभ योग रात्रि 4:01 तक, शकुनि योग प्रात: 8:26 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:36 से मीन राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज पितृकार्य अमावस्या, पंचक, मन्वादि है। महापात योग रात्रि 3:45 से आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: सूर्योदय से 9:36 तक, शुभ 11:06 से 12:35 तक, चर 3:34 से 5:03 तक, लाभ 5:03 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:37, सूर्यास्त 6:33

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन/संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कन्या
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। आज परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा।